4

प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण का प्रारूप

अशोक कुमार*

प्रस्तावना

किसी कार्य विशेष को कुशलता के साथ करने के लिए ज्ञान, कुशलता, अभिरुचि तथा क्षमताओं में वृद्धि की प्रक्रिया को प्रशिक्षण कहते हैं।

प्रशिक्षण यह सुनिश्चित करता है कि आपका कार्यबल वर्तमान तथा भविष्य दोनों की आवश्यकताओं के अनुसार अपनी कुशलताओं का विकास करता रहेगा। प्रशिक्षण का उद्देश्य शिक्षकों को उनके वर्तमान तथा आगामी कार्यों से परिचित होने हेतु सक्षम बनाता है। इससे नये शिक्षक न्यूनतम समय में अधिक कार्यकुशल बनते हैं। आज जो दिन-प्रतिदिन शिक्षा का व्यावसायीकरण तथा प्रौद्योगिकरण होता जा रहा है, तो इसके कारण भी जो बदलाव आता है, उस बदलाव को समझने के लिए भी शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। इन कार्यों हेतु विशिष्ट कुशलताओं की आवश्यकता होती है, जिन्हें उपयुक्त तथा सर्वश्रेष्ठ रूप से परिचालित कार्य विधियों के द्वारा ही विकसित किया जा सकता है।

* *प्रवक्ता*, डाईट, आर.के. पुरम, नयी दिल्ली

शिक्षक प्रशिक्षण के लाभ

1. **उच्चतर कार्य निष्पादन** – प्रशिक्षण के द्वारा समग्र रूप से विद्यालय तथा शिक्षण दोनों के कार्य की गुणवत्ता बेहतर होती है। ज्ञान, कार्यकुशलता तथा उत्पादकता में भी वृद्धि होती है।
2. **उच्च मनोबल** – इससे शिक्षकों के कार्य संबंधी संतोष तथा मनोबल में वृद्धि होती है तथा सकारात्मक सोच विकसित होती है। शिक्षक अपने कार्य में आत्मनिर्भर हो जाते हैं क्योंकि उन्हें मालूम होता है कि उन्हें क्या करना है? कैसे करना है? इसके कारण वह अपने विद्यालय के प्रति अधिक सहायक सिद्ध होते हैं।
3. **प्रबंधन में सहभागिता** – इससे अधिकारों के प्रत्यायोजन तथा विकेन्द्रीकरण में सहायता मिलती है। प्रशिक्षित शिक्षक नये तथा चुनौतीपूर्ण कार्य स्वीकार करने हेतु तत्पर रहते हैं।

4. **शिक्षकों के अपने कार्य में कुशल बनाना** – प्रशिक्षण से एक शिक्षक, शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी ढंग से चलाने में सफ़ल होता है क्योंकि अब शिक्षक वैयक्तिक भेदों को ध्यान में रखकर ही शिक्षण करता है।
5. शिक्षण में निखार लाने के लिए नयी तकनीकों तथा खेल गतिविधियों से उन्हें सुसज्जित करना।
6. कक्षा नियोजन तथा प्रबंधन में दक्षता हासिल करना।
7. शिक्षण सामग्री चयन, निर्माण व प्रयोग एवं रखरखाव की विस्तृत व व्यावहारिक जानकारी देना।

अच्छे प्रशिक्षण के गुण

1. प्रशिक्षण स्थल का माहौल तनावरहित, सजीव और भयमुक्त हो।
2. प्रतिभागी और प्रशिक्षण सक्रिय हो।
3. प्रशिक्षण कार्य प्रणाली रुचिपूर्ण और आनंदायक हो।
4. प्रशिक्षण में उन गतिविधियों पर बल देना, जिससे प्रतिभागी की विषय पर समझ और कौशल विकसित हो।
5. प्रशिक्षक अपनी विषय वस्तु के प्रतिभागियों की क्षमता और ज़रूरत के अनुसार लचीले ढंग से प्रस्तुत करनी चाहिए।
6. प्रशिक्षक और प्रतिभागी के बीच सहज संप्रेषण हो।

शिक्षक-प्रशिक्षण की आवश्यकता

शिक्षा के आधुनिकीकरण के फलस्वरूप शिक्षा की माँग दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस आधुनिकीकरण के युग में शिक्षण की नयी-नयी विधियों का प्रयोग किया जा रहा है, जिससे शिक्षण क्रियाओं को और भी प्रभावी बनाया जा सकता है। इस कारण शिक्षकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। प्रशिक्षण के महत्त्व को हम दिन-प्रतिदिन या व्यवहारिक उदाहरण से भी समझ सकते हैं- अकसर देखा जाता है कि एक माँ अपने एक बच्चे की क्रियाओं को लेकर सदैव चिंतित रहती है। जैसे – पढ़ता नहीं है, खेलता ज़्यादा है इत्यादि। वहीं, एक अध्यापक एक कक्षा में 40 विद्यार्थियों की क्रियाओं से परेशान नहीं होता है क्यों?

उपरोक्त दोनों बिंदुओं में अंतर यह है कि शिक्षक अकसर बच्चे को बच्चे की ही तरह देखता है। अर्थात् शिक्षक बच्चे के सभी पहलुओं (जैसे – मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और अनुभव) को देखता है। पर अगर दूसरी तरफ़ देखें तो जब एक माँ बच्चे को देखती है, तो सिर्फ़ एक पहलू से ही देखती है कि सिर्फ़ मेरा ये बच्चा है। वह बच्चे में अन्य सभी पहलुओं को नज़रअंदाज़ करती है। (जैसे, बच्चे की आयु, मनोवैज्ञानिक एवं बच्चे के अनुभव) अर्थात् दोनों ही पहलुओं में अंतर सिर्फ़ प्रशिक्षण का है कि कैसे बच्चे के सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर उसके साथ समायोजन करें। एक शिक्षक को यह प्रशिक्षण दिया गया है और एक माँ को यह प्रशिक्षण नहीं दिया गया है और एक अध्यापक प्रशिक्षण के आधार पर ही बच्चे के साथ अच्छा समायोजन कर लेता है। अतः उपरोक्त उदाहरण के आधार

पर एक शिक्षक को निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है कि –

- प्रस्तुतीकरण व शिक्षण कला में निपुणता।
- व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने के लिए।
- अच्छे समायोजन के लिए।
- छात्रों की दैनिक समस्याओं से संबंधित जानकारी के लिए।
- शिक्षकों की कार्यकुशलता को बढ़ाकर, उनकी सोच एवं व्यवहार में मानवीय गुणों का विकास करना।

प्रशिक्षण से पूर्व होने वाली क्रियाएँ

- **प्रशिक्षण स्थल का चयन** – प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत करने से पहले संदर्भ व्यक्ति व प्रशिक्षण समन्वयक को स्थल की जाँच-पड़ताल करनी चाहिए, जिसमें निम्नलिखित बिंदुओं का मुख्य रूप से ध्यान रखना चाहिए।
- प्रशिक्षण स्थल का वातावरण शांत स्वच्छ व सुगम होना चाहिए।
- प्रशिक्षण स्थल की दूरी बहुत ज़्यादा नहीं हो जिससे प्रतिभागियों को आने में परेशानी हो तथा दूरी के साथ-साथ परिवहन की सुविधाओं का भी ध्यान रखना चाहिए।
- खान-पान एवं शौचालय की भी व्यवस्था का ध्यान रखना चाहिए।
- प्रशिक्षण स्थल के पास विद्यालय हो, जहाँ पर प्रशिक्षण कार्य को वास्तविक स्थितियों में संपन्न किया जा सके।
- प्रशिक्षण तकनीक के आधुनिक साधन जैसे प्रोजेक्टर, एल.सी.डी. नक्शे, चार्ट इत्यादि का भी ध्यान रखना चाहिए।
- समय-चक्र का निर्धारण भी परस्पर विचार-विमर्श से किया जाना चाहिए।

प्रशिक्षक की भूमिका

प्रशिक्षण कार्यक्रम को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत करने में एक प्रशिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। प्रशिक्षक मॉडयूल कितना ही सशक्त क्यों न हो? जब तक प्रशिक्षणार्थी तक प्रभावशाली ढंग से पहुँचाया नहीं जाएगा, तब तक उसकी महत्ता स्पष्ट नहीं हो पाएगी। इस दृष्टि से प्रशिक्षक मॉडयूल तथा प्रशिक्षणार्थियों के मध्य की मज़बूत कड़ी के रूप में कार्य करता है। अत: प्रशिक्षक का महत्त्व प्रशिक्षण में इस प्रकार होता है जिस प्रकार "एक शरीर में रीड़ की हड्डी होती है" इसलिए एक प्रशिक्षक का चयन बड़ी सावधानी से करना चाहिए।

प्रशिक्षक का चयन – प्रशिक्षक का चयन करते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखना चाहिए अर्थात् प्रशिक्षक के चयन का निम्न आधार होना चाहिए –

- प्रशिक्षक की परिपक्वता
- प्रशिक्षक का अनुभव
- प्रशिक्षक का विषय ज्ञान
- प्रशिक्षक का रुचिकर क्षेत्र

  उपरोक्त बिंदुओं पर विचार के बाद प्रशिक्षक का चयन अच्छा होने की संभावना बढ़ जाती है।
- प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा पहले ही दिन उपलब्ध कराना, जिससे प्रशिक्षण कार्यक्रम में कोई बाधा ना आए।

- प्रशिक्षण के समन्वयक के लिए यह आदर्श बात होगी कि वह अपने (कार्यक्रम) प्रशिक्षण में निम्न बिंदुओं को शामिल करे –
  – विद्यालयों व विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञ लोगों को शामिल करना।
  – सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं से लोगों का चयन।
  – सामाजिक कार्यों से जुड़े अनुभवी लोगों को शामिल करना।
  – विभिन्न संस्थाओं के विद्वानों को आमंत्रित किया जाना चाहिए, जिससे ज़्यादा से ज़्यादा लोगों के अनुभवों का प्रतिभागियों को फ़ायदा मिल सके।

प्रशिक्षण के दौरान होने वाली क्रियाएँ

- सबसे पहला और महत्त्वपूर्ण बिंदु यह है कि प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षण समन्वयक को प्रशिक्षक के साथ ही रहना चाहिए।
- प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षक की सहायता करनी चाहिए –
  जैसे –
  – प्रोजेक्टर को चलाना।
  – कापी, पेन, पेपर उपलब्ध कराना।
  – कभी-कभी अनुशासन में सहायता करना।
  – प्रशिक्षक व प्रशिक्षणार्थियों के बीच मधुर संबंध बनाने में सहयोग करना।
  – प्रशिक्षणार्थियों की कुछ व्यक्तिगत समस्याओं को सुनना व उनका निदान करना।
  – प्रतिभागियों से पंजीकृत फॉर्म भरवाना।
  – प्रशिक्षण समन्वयक को 'समय सीमा' का पूरा ध्यान रखना और खान-पान का प्रबंध कराने में पूरा सहयोग करना।
  – प्रशिक्षक द्वारा दी गई उद्गम सामग्री को प्रतिभागियों में वितरित करना व सभी को उपलब्ध कराना।
  – प्रशिक्षण के दौरान उन प्रशिक्षणार्थियों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, जो पिछड़ रहे हैं।
  – प्रशिक्षण में participatary learning approach पर अधिक ध्यान देना, जिससे प्रतिभागियों की भागीदारी बढ़े व वह भली प्रकार सीख सकें।

प्रशिक्षण के उपरांत होने वाली क्रियाएँ

- अंतिम दिन प्रतिभागियों के खेल के रूप में क्रियाओं का संचालन करना।
- प्रमाण-पत्र वितरण की सुनिश्चित व्यवस्था करना।
- प्रशिक्षकों की प्रतिक्रियाओं पर पूर्ण ध्यान देना, जिससे अगली बार उन बिंदुओं को ध्यान में रखकर ही प्रशिक्षण सामग्री को बनाया जाए।
- प्रशिक्षण के अंतिम दिवस प्रतिभागियों के वित्तीय रिकार्ड तैयार करना व प्रतिभागियों के हस्ताक्षर लेना।

प्रशिक्षकों की समस्याएँ/बाधाएँ

- प्रतिभागी समूह का आपस में ताल-मेल कई बार गड़बड़ा जाता है। कोई एक प्रतिभागी हावी हो जाता है, शेष प्रशिक्षक कम सक्रिय

या लगभग निष्क्रय हो जाते हैं।

- कई बार प्रशिक्षक व प्रतिभागी के संबंध में ठीक ताल-मेल नहीं हो पाता है।
- बेवजह उलझाने वाले प्रतिभागी चर्चा से भटका देते हैं।
- महिला प्रतिभागियों के समूह अलग बन जाते हैं।
- कभी-कभी नई गतिविधियों के निर्माण में भी प्रशिक्षकों को कठिनाई होती है।
- प्रशिक्षण स्थल पर उचित सुविधाओं का ना होना भी प्रशिक्षकों की एक बड़ी समस्या है। इस कमी से प्रतिभागी प्रभावित होते हैं।

प्रशिक्षकों के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

- दो सत्रों के मध्य संबंध बना होना चाहिए, जिससे यह न लगे कि दोनों विषय एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं अर्थात् पहले सत्र को दूसरे के साथ जोड़ेंगे तब प्रतिभागी का प्रशिक्षण के प्रति सक्रिय रूप से जुड़ने का भाव उत्पन्न होगा।
- सत्र का आरंभ भाषण या लंबी भूमिका के बजाय किसी रोचक घटना से किया जाना अधिक बेहतर है।
- आप कोई महत्त्वपूर्ण चर्चा कर रहे हों और चर्चा अपनी चरम सीमा पर है। ऐसे में किसी अधिकारी/निरीक्षक के आ जाने पर चर्चा को बीच में रोककर/जल्दी खत्म करवाकर उनके स्वागत की औपचारिकता ज़रूरी नहीं है।
- यह सत्य है कि प्रशिक्षक के पास प्रतिभागी के प्रत्येक सवाल का जवाब नहीं होता है। यदि आपको लगता है उस सवाल का जवाब आपका साथी अच्छे से दे सकता है, तो बेहिचक उसे उत्तर के लिए आमंत्रित करें।

सुझाव

- शिक्षक-प्रशिक्षण से पूर्व प्रशिक्षकों को भी आवश्यक पहलुओं/बिंदुओं का पता लगाना चाहिए जिससे प्रशिक्षण कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाया जा सके।
- प्रशिक्षण के दौरान सिर्फ़ मुख्य पहलुओं पर ही चर्चा होनी चाहिए जो प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाऐं आयी थीं।
- शिक्षकों की प्रतिक्रियाओं को नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए। इससे समय, श्रम और धन का अपव्यय होने से बच जाता है।
- प्रशिक्षक द्वारा प्रस्तुत विषय-वस्तु प्रभावी होनी चाहिए।
- समय-समय पर प्रशिक्षण आवश्यकता का विश्लेषण करना चाहिए।
- प्रशिक्षण सामग्री तैयार करते समय प्रत्येक क्रिया को एक-दूसरे के साथ जोड़ा जाना चाहिए।
- समय-समय पर स्कूल के प्रधानाचार्य/उच्च अधिकारियों द्वारा प्रशिक्षण स्थल का अवलोकन करना चाहिए जिससे अनुशासन बना रहने में सहयोग मिलता है।
- प्रशिक्षकों को, प्रतिभागियों के स्तर व रुचि का पूरा ध्यान रखना चाहिए।
- प्रशिक्षण के दौरान कभी भी एक-दूसरे

प्रतिभागी की तुलना नहीं करनी चाहिए। प्रत्येक प्रतिभागी अपनी प्रकृति व स्वभाव में अलग होता है। अत: उन्हें एक ही पैमाने पर न आकें।

- प्रतिभागियों को अपनी बात रखने का भरपूर समय देना चाहिए।
- कुछ प्रश्नों के जवाब अगर विशेष वर्ग के हैं तो उनके उत्तर अलग से प्रतिभागी को समय रहते देने चाहिए।
- प्रतिभागियों को विश्वास में लें तथा उनसे उनकी हर छोटी-बड़ी बातों पर खुलकर चर्चा करें।
- प्रतिभागियों को विषय के चयन की पूरी आज़ादी होनी चाहिए। जिसमें वह अपनी रुचि एवं अभिक्षमता के अनुसार प्रतिभागी बन सके।
- प्रतिभागी अगर आशानुरूप प्रदर्शन नहीं कर पा रहे हैं, तो उन्हें डाँटने की ज़रूरत नहीं है बल्कि उनके कारणों को जानने का प्रयास करें।

प्रशिक्षण की गुणवत्ता का एक बड़ा मानक है शिक्षक के लिए उसकी प्रासंगिकता। लेकिन इस तरह के ज़्यादातर कार्यक्रम वास्तविक ज़रूरत को ध्यान में रखकर नहीं बनाए जाते। अधिकांश कार्यक्रमों में भाषण-आधारित अभिगम अपनाया जाता है, जिसमें प्रशिक्षुओं को भागीदारी करने का मौका नहीं मिलता। विडंबना यह है कि, गतिविधि-आधारित शिक्षा, बड़ी कक्षाओं का प्रबंधन, बहुस्तरीय/श्रेणीय शिक्षा, और सामूहिक शिक्षण जैसे विषय जिन्हें करके दिखाने की ज़रूरत है, उन्हें भी भाषणों द्वारा पढ़ाया जाता है। स्कूल अनुवर्तन (फॉलोअप) की शुरुआत भी नहीं हो सकी है और संकुल स्तर की बैठकें ऐसे पेशेवर मंचों के रूप में विकसित नहीं हो सकी हैं जहाँ शिक्षक साथ बैठें, चिंतन करें और एक साथ योजना बनाएँ।

– राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005